PGDSHST

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रीय कार्य
2026

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में
प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

अनुवाद अध्ययन और प्रशिक्षण विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम
(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)
सत्रीय कार्य 2026

(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.

प्रिय विद्यार्थियो,

जैसा कि 'सिंधी–हिंदी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा कार्यक्रम' (पी.सी.एस.एच.एस.टी.) की 'कार्यक्रम दर्शिका' में आपको बताया गया है कि इस अध्ययन कार्यक्रम में पढ़ाई के साथ–साथ आपको कुछ सत्रीय कार्य भी करने हैं। आठ पाठ्यक्रमों वाले इस कार्यक्रम के छह पाठ्यक्रमों के अंतर्गत आपको एक–एक सत्रीय कार्य करना होगा और दो पाठ्यक्रम 'अनुवाद परियोजना' से संबंधित हैं। सत्रीय कार्य आपकी आंतरिक परीक्षा है। अतः इन्हें ध्यानपूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ करें। प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रत्येक पाठ्यक्रम के सत्रीय कार्य आप अपनी सुविधा के अनुसार अलग–अलग प्रस्तुत कर सकते हैं और एक साथ भी प्रस्तुत कर सकते हैं! सत्रीय कार्य प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि इस प्रकार हैं :

पाठ्यक्रम कोड एवं शीर्षक	प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि*	
	जनवरी 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए	जुलाई 2026 में प्रवेश पाने वाले विद्यार्थियों के लिए
एम.टी.टी.–001 भारतीय भाषाओं में अनुवाद	**30.09.2026**	**31.03.2027**
एम.टी.टी.-041 सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन	**30.09.2026**	**31.03.2027**
एम.टी.टी.–042 सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	**30.09.2026**	**31.03.2027**
एम.टी.टी.–043 अनुवाद सिद्धांत और सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद परंपरा	**30.09.2026**	**31.03.2027**
एम.टी.टी.–044 अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि : सिंधी–हिंदी–सिंधी का संदर्भ	**30.09.2026**	**31.03.2027**
एम.टी.टी.–045 हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद	**30.09.2026**	**31.03.2027**

* **सत्रीय कार्य जमा कराने की अंतिम तिथि के बारे में अद्यतन जानकारी प्राप्त करने के लिए आप इग्नू वेबसाइट देखिए। आपको सलाह दी जाती है कि आप सत्रीय कार्यों को निर्धारित तिथि के पहले ही भेज दें।**

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और उसे कहाँ तक व्यवहार में ला सकते हैं। यानी आपको इस योग्य बनाना है कि अध्ययन के दौरान जो जानकारी आपको प्राप्त हुई है उसे अपने शब्दों में विधिवत प्रस्तुत कर

सकें और अनुवाद कार्य में उसे व्यवहार में लाते हुए अच्छा अनुवाद कर सकें। प्रस्तुत कार्यक्रम के अंतर्गत आपको भारतीय भाषाओं में अनुवाद, सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन के साथ–साथ सिंधी और हिंदी भाषाओं के विभिन्न भाषिक क्षेत्रों में अनुवाद का अभ्यास कराया गया है। इसके अलावा अनुवाद संबंधी सिद्धांतों, प्रक्रिया और प्रविधि से भी परिचित कराते हुए इन भाषाओं में अनुवाद की परंपरा से अवगत कराया गया है।

सत्रीय कार्य करने से पहले कुछ बातें

1) उत्तर के लिए फुलस्केप कागज का ही इस्तेमाल करें।

2) प्रत्येक सत्रीय कार्य के लिए अलग उत्तर–पुस्तिका बनाएँ। इस तरह आपके तीन सत्रीय कार्यों के लिए तीन उत्तर–पुस्तिकाएँ होनी चाहिए।

3) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के दाहिने कोने के सबसे ऊपर अपना नामांकन संख्या, पूरा पता लिखें तथा तिथि सहित हस्ताक्षर करें।

4) अपनी उत्तर–पुस्तिका के प्रथम पृष्ठ के बाएँ कोने पर कार्यक्रम का शीर्षक, पाठ्यक्रम का कोड, उसका शीर्षक, सत्रीय कार्य कोड तथा अध्ययन केंद्र का नाम/कोड लिखें।

आपका सत्रीय कार्य इस प्रकार आरंभ होना चाहिए :

कार्यक्रम का शीर्षक : ..... नामांकन संख्या : .....
नाम : .....
पता : .....
.....

पाठ्यक्रम कोड :.....
पाठ्यक्रम का शीर्षक : ..... हस्ताक्षर :.....
सत्रीय कार्य कोड : ..... तिथि : .....

5) पाठ्यक्रम के कोड तथा सत्रीय कार्य के कोड सत्रीय कार्य पर मुद्रित होते हैं और वहाँ से देखकर लिखे जा सकते हैं। प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

6) अपने उत्तर केवल फुलस्केप कागज पर लिखें और उन्हें अच्छी तरह नत्थी कर दें। बहुत पतले कागज पर न लिखें। बायीं ओर 4 से.मी. का हाशिया छोड़ दें। एक उत्तर और दूसरे उत्तर के बीच कम से कम 4 पंक्तियों का स्थान छोड़ें। ऐसा करने से परीक्षक उचित स्थान पर अपनी टिप्पणी दे पाएँगे।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

- सत्रीय कार्य में दिए गए निर्देशों के अनुसार उत्तर लिखिए। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर समुचित कोश का उपयोग करते हुए प्रसंग और संदर्भानुसार देने हैं।
- प्रत्येक सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़ें और उसमें यदि कोई विशेष निर्देश दिए गए हों तो उनका पालन करें। सत्रीय कार्य जिन इकाइयों पर आधारित हैं, उन्हें पढ़ लें। प्रश्न के संबंध में महत्वपूर्ण बातों को नोट कर लें, फिर उनको व्यवस्थित करके अपने उत्तर की रूपरेखा बनाएँ।

- जब आपको विश्वास हो जाए कि जो उत्तर आप देने जा रहे हैं संतोषजनक हैं, तब उन्हें साफ–साफ लिखें और जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दें।
- अनुवाद के व्यावहारिक प्रश्नों को करते समय 'कोश' का भरपूर प्रयोग करें। विषय एवं संदर्भ का विशेष ध्यान रखें। मलयालम और हिंदी के कथनों की तुलना करें। यह देखें कि अनुवाद से वही अर्थ निकल रहा है जो मूल सामग्री से निकलता है। यह भी सुनिश्चित करें कि आपका अनुवाद लक्ष्य भाषा की उपयुक्त शैली के अनुरूप है, स्रोत भाषा की छाया मात्र नहीं। अनुवाद में मूल लेखन की–सी सहजता लाने के लिए अपनी कल्पनाशीलता और लेखन–क्षमता का उपयोग करें।
- निबंधात्मक प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रस्तावना और निष्कर्ष के संबंध में विशेष ध्यान दें। प्रस्तावना संक्षेप में होनी चाहिए। इसमें यह बताएँ कि प्रश्न से आप क्या समझते हैं और आप क्या लिखने जा रहे हैं। निष्कर्ष में आपके उत्तर का सार होना चाहिए। उत्तर सुसंगत और सुसंबद्ध हों। वाक्यों और अनुच्छेदों में परस्पर तालमेल होना चाहिए। उत्तर सत्रीय कार्य में दिए गए प्रश्न से संबद्ध होना चाहिए। यह देख लें कि आपने प्रश्न में निहित सभी मुख्य बातों के उत्तर शामिल किए हैं।

सत्रीय कार्य पूरा करने के बाद यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपके उत्तर तार्किक और सुसंगत हों।

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो।

ग) उत्तर सही ढंग से लिखे गए हों तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति उत्तर के पूर्णतया अनुकूल हो।

घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबे न हों।

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से वर्तनी और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

च) उत्तर अपने हाथ से लिखें। इसे मुद्रित या टाइप न करें। अपने उत्तर को विश्वविद्यालय द्वारा आपके पास भेजी गई इकाइयों से नकल न करें। यदि आप ऐसा करते हैं तो आपको कम अंक मिलेंगे।

छ) अन्य विद्यार्थियों के उत्तरों से नकल न करें, यदि यह पाया जाता है कि आपने नकल की है तो आपके सत्रीय कार्यों को अस्वीकृत कर दिया जाएगा।

ज) प्रत्येक सत्रीय कार्य को अलग–अलग लिखें।

झ) प्रत्येक उत्तर के साथ उसके प्रश्न की संख्या लिखें।

ञ) सत्रीय कार्य को पूरा करके इसे अध्ययन केंद्र के पास भेज दें। अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य की उत्तर–पुस्तिका को किसी भी स्थिति में **मुख्यालय के विद्यार्थी मूल्यांकन प्रभाग को मूल्यांकन के लिए न भेजें।**

ट) अध्ययन केंद्र में सत्रीय कार्य को प्रस्तुत करते समय निर्धारित प्रेषण एवं पावती कार्ड पर अध्ययन केंद्र से (सत्रीय कार्य प्राप्त किए) प्राप्ति दर्ज करा लें।

ठ) यदि आपने क्षेत्र को बदलने के संबंध में निवेदन किया है तो आप अपने सत्रीय कार्यों को अपने पहले के अध्ययन केंद्र में ही तब तक भेजते रहें जब तक विश्वविद्यालय की ओर से आपको क्षेत्रीय केंद्र बदलने की सूचना नहीं भेज दी जाती।

शुभकामनाओं के साथ,

सिंधी–हिंदी अनुवाद : तुलना और पुनःसृजन (एम.टी.टी.–041)
(जनवरी 2026 और जुलाई 2026 सत्रों के लिए)

कार्यक्रम कोड : पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.
पाठ्यक्रम कोड : एम.टी.टी.–041
सत्रीय कार्य : एम.टी.टी.–041/एएसटी/(टी.एम.ए)/2026

अधिकतम अंक : 100

---

1. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 300–300 शब्दों में दीजिए : 10x2=20
   (क) सिंधी और हिंदी की लिंग व्यवस्था की तुलना कीजिए।
   (ख) सिंधी भाषा और साहित्य पर संस्कृत की परंपरा के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

1 आंडो	8 तंगी	15 मोचिड़ो
2 आहिस्ते	9 नीहुं	16 लबा़ड़
3 उथणु	10 पलउ	17 वहिदत
4 कतणु	11 अलभु	18 वेरी
5 कोड़ियो	12 फरेबु	19 सघ
6 घुंजु	13 बाझारो	20 हिरासु
7 टपाली	14 मिस्कीनु	

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

1 अपच	8 दौर	15 मरोरथ
2 आदि	9 नट	16 मंथन
3 करुण	10 नैन	17 राउ
4 कौड़ी	11 परिश्रम	18 लोभी
5 चकित	12 पहाड़ा	19 शिखर
6 जेब	13 पैराकार	20 साबुत
7 टीपना	14 बदन	

4. निम्नलिखित सिंधी वाक्यों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 20

   1. तव्हां कहिड़े विषय में डिग्री हासिल कई आहे?
   2. तव्हां जे पुट/धीउ जो नालो बुधायो।
   3. विमला घर जो कमु करे आई आहे।
   4. गोपालदास जो पुटु दुबईअ में कमाईंदो आहे।
   5. राकेश फिकी चांहि पीयंदो आहे।
   6. रेखा मोहिनीअ जी पकी साहेड़ी आहे।
   7. शांता अज़ु बेसण जी भाज़ी ठाही आहे।
   8. मां रोज़ सुबुह जो पंधु करण वेदों आहियां।
   9. किशनी ऑफीस में नौकरी कंदी आहे।

10. गिदवाणी शाम जो पंजे बजे असांजे घरु ईंदो।
11. मोहनदास जे पुट जी शादी होटल में आहे।
12. राधा मिठे आवाज़ में गाईंदी आहे।
13. अजु असां जे कॉलेज में क्रिकेट चटाभेटी आहे।
14. असां जे स्कूल में शाम जो सिंधी भाषा सेखारण जा क्लास हली रहिया आहिनि।
15. राकेश कथक नृत्य सिखियो आहे।
16. अजु असां सर्कस डिसण वेंदासीं।
17. सदाईं सादो खाधो खाइणु घुरिजे।
18. अजु मंदर में भागवत कथा थींदी।
19. आरतवार डींहुं असां दिल्लीअ वेंदासीं।
20. माधव जा इम्तहान सूमर खां शुरु थींदा।

5.(क) निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों का आशय हिंदी में स्पष्ट कीजिए : 10

1. आई टांडे खे बोरचियाणी थी वेठी।
2. घणे खाधे घणी बुख।
3. जेसीं सास तेसीं आस।
4. जेको अध खे छडे सजीअ पुठियां डुके, सो अध खां बि वञे।
5. धकु हणु धीअ खे त सिखे नुंहं।
6. बदन में दमु न ठहे नालो जोरावर खान।
7. ब भाउर टियों लेखो।
8. भाणु त खेती न त कोरी रेती।
9. माउ जणींदी पुटिड़ा, भागु न डींदी वंडे।
10. जेडो क़ाइदो, ओतिये फ़ाइदो।

(ख) निम्नलिखित मुहावरों/लोकोक्तियों के लिए हिंदी मुहावरे/लोकोक्तियाँ लिखिए : 10

1. दूहों दुखाइणु
2. दिल सां लगणु
3. दादु डियणु
4. रुक जा चणा चबणु
5. लकु लंघणु
6. सीनो साहिजु
7. अखि डेखारणु
8. डंद डियणु
9. साहु छडणु
10. हिक लठि सां हकिलणु

6. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 10x2=20

(क) कंवर वटि सदाईं लूलनि लंगिड़नि, पिंगुलनि, अंधनि, मंडनि जो अटालो रहदो हो, जिनि जो पालण पोषणु पंहिंजे हड़ां–बड़ां कंदो हो। हिक दफ़े, कंभलीमा जे गोठ में अमृत वेले भजनु करण लाइ संगति में आयो ऐं ख्यालु होसि त मंझंदि ताईं कीर्तनु चालू रखंदो। वक़्तु वियो गुज़िरंदो ऐं मेलो वियो मचंदो। माण्हू मौज सां शब्द वर्षा जो रसु पी रहिया हुआ, त हिक शेवाधारीअ चयुसि, 'साई तव्हां जे टोलीअ में हिकु सूरदासु आहे। चवे थो त जेसी तव्हीं तेल मेट सां न विहिंजारींदा, तेसीं हू पाण अनु जलु न वर्ताईंदो।' इन ते कंवर चयुसि, 'हाजुरु, कीर्तनु पूरो करे अची थो सनानु करायांसि।' पूरे बारहें बजे मजलिस बरखास्तु थी ऐं कंवरु मोटी आयो सूरदास वटि। पोइ यकदमि छेर जामो लाहे, मेटु मले ऐं उनमें तेलु विझी,

सूरदास जे बुत जी खूबु मालिश कई ऐं महिट चहिट करे उनखे अछो उजिरो कयाई अहिड़ो हो कंवरु जंहिं जहिड़ो किरोड़नि में को मुश्किलु लभे!

(ख) मुहं ते खुशामद करण मां घणियूं ख़राबियूं थियूं जागनि। हिकिडो त खुशामद कंदडु अंदिरीं बाहिरी करणु सिखंदो, जंहिं लाइ शाइर चयो आहे; चे 'बाहिरां ज़ेबु ज़िबान में, दिलि में हचारो' बियो त जंहिंजी खुशामद थींदी सो दुनियां पाणियूं वियो। मंझिसि जेके अवगुण ऐं बदि ख़सिलतूं हूंदियूं, से छडणु त छडण जे मागि, उटिलो उन्हनि में वेंदो पको थींदो तारीख मां केतिरा मिसाल मिलनि था त हाकिम जुल्मी या बदिकार हूंदा हुआ ऐं सलाहकार ऐं वज़ीर मिलंदा हुअनि लिली चिपी कंदड़, त मुल्क में अंधेरु बरी वेंदो हो, दुनिया में सचु चईं डींदड़ थोरा लभंदा।

खुशामद जी गिला करण मां इहो मतिलबु न आहे त कंहिं शख्स में चङा गुण ऐं खसिलतू हुजनि, त संदसि दिलि वठण ऐं खेसि हिमिथाइण लाइ, संदसि साराह न कजे, साराह करण त वाजिबु आहे, पर तजवीज़ सां, जीअं मंझिसि हठु न जागे ऐं आफिरिजी न वञे। बियो त घणा माइट बार खे चतुराईअ जो को जवाबु डींदा, या अकुल जी गाल्हि कंदे बधंदा आहिनि, त बियनि जे रूबरू संदसि मुंहं ते खेसि साराहींदा आहिनी। इन्हीअ करे बारनि में नंढे ई हठ ऐं अभिमान जो बिजु थो पवे।

7. निम्नलिखित अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 10

भारतवर्ष में वेदों के लिए आज भी स्थान है। प्राचीनकाल में तो वेदों की शिक्षा ही सर्वेसर्वा समझी जाती रही थी। कालांतर में वेदार्थ भी अति–दुर्जेय हो गया था। समाधिस्थ पुरुष जिस भाँति ब्रह्म दर्शन का आनंद–लाभ प्राप्त कर सकता था, उसी भाँति समाधियुक्त अंतःकरण द्वारा ही शब्द ब्रह्म रूपी वेद का सही अर्थ समझ में आ सकता था। वेद अलौकिक ज्ञान भंडार के आधार हैं, जिनमें ज्ञान और विज्ञान भरा–पूरा है। मंत्रद्रष्टा ऋषियों (Research Scholars) उन्हें समाधि अवस्था में देखा है। लौकिक उपायों से वेद को समझने के लिए कालांतर में विद्वानों ने ग्रंथ रच डाले। वे हैं – वेदांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष)। तदनंतर वेदोपांग (दर्शनशास्त्र) भी सामने आए। इतने पर भी वेदों की गूढ़ता बनी ही रही, तब पुराण और इतिहासों ने इन्हें और अधिक लौकिक, आध्यात्मिक एवं आलंकारिक भाषा में सुगम करने का उपाय जनता के सम्मुख रखा। अतः वेदार्थ का वास्तविक रहस्य जानने के पूर्व इन षडंग (षट्शास्त्र) को जानना अति–आवश्यक है। इनके साथ ही वेदोपांग से भी पूर्ण परिचित होना भी आवश्यक है।

***